



॥वि.श॥ ॐ श्रीग
॥१॥ ॥२॥ ॐ
॥५॥ ॐ
ॐ गुरु
नमः॥
व्यक्ताय
प्रनंता
उनागा
मः॥२२॥

यनमः॥
पयनमः
मः॥८॥
तक्षाय
३॥ उग्र
॥५६॥ ॐ ॥ राम॥
॥१२॥
दिायन ॥१॥
॥२४॥

॥वि.श॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ ॐ वासुदेवाय नमः॥ ॥ ॐ हृषीकेशाय नमः॥
 ॥१॥ ॥२॥ ॐ वामनाय नमः॥ ३॥ ॐ जलशाय नमः॥ ४॥ ॐ जनार्दनाय नमः॥
 ॥५॥ ॐ हरये नमः॥ ६॥ ॐ कल्याय नमः॥ ७॥ ॐ श्रीवत्साय नमः॥ ८॥
 ॐ गरुडध्याय नमः॥ ९॥ ॐ वाराहाय नमः॥ १०॥ ॐ पुंडरीकाक्षाय
 नमः॥ ११॥ ॐ नृसिंहाय नमः॥ १२॥ ॐ नरकांतकाय नमः॥ १३॥ ॐ अ
 व्यक्ताय नमः॥ १४॥ ॐ शाश्वताय नमः॥ १५॥ ॐ विष्णुवे नमः॥ १६॥ ॐ
 पुनंताय नमः॥ १७॥ ॐ अज्ञाय नमः॥ १८॥ ॐ अविद्याय नमः॥ १९॥ ॐ
 उनाय नमः॥ २०॥ ॐ गदाध्याय नमः॥ २१॥ ॐ गोविंदाय न
 मः॥ २२॥ ॐ कीर्तिभाजनाय नमः॥ २३॥ ॐ गोवर्धनाय नमः॥ २४॥

॥ रास ॥

॥ १ ॥

Title - श्रीविष्णुशतनामस्तोत्रम्

Accession No - Title -

Accession No -

Folio No/ Pages - 3/6

Lines -

Size -

Substance Paper -

Script Devanagari - देवनागरी

Language - संस्कृत

Period -

Beginning - ॐ श्रीगणेशाय नमः । ॐ वासुदेवाय नमः ।

End - उपरवक्ष्याम्युतं पुण्यं कलमाप्नोतिमानवः ।
 इति श्रीविष्णुशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ प्रमदः ॥

Colophon -

Illustrations -

Source -

Subject - धर्मशास्त्र

Revisor -

Author - श्रीमान्

1. Remarks -

एकीकृत / प्रकीर्ण

॥ वि. श. ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ वासुदेवाय नमः ॥ ॥ ॐ हृषीकेशाय नमः ॥
 ॥ २ ॥ ॐ वामनाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ जलशाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ जनार्दनाय नमः ॥
 ॥ १ ॥ ॥ ५ ॥ ॐ हरये नमः ॥ ६ ॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ श्रीवत्साय नमः ॥ ८ ॥
 ॐ गरुडध्वजाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ वाराहाय नमः ॥ १० ॥ ॐ पुंडरीकाक्षाय
 नमः ॥ ११ ॥ ॐ नृसिंहाय नमः ॥ १२ ॥ ॐ नरकांतकाय नमः ॥ १३ ॥ ॐ अ
 व्यक्ताय नमः ॥ १४ ॥ ॐ शाश्वताय नमः ॥ १५ ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ १६ ॥ ॐ
 प्रनंताय नमः ॥ १७ ॥ ॐ अज्ञाय नमः ॥ १८ ॥ ॐ अविद्याय नमः ॥ १९ ॥
 ॐ नारायणाय नमः ॥ २० ॥ ॐ गदाध्वक्षाय नमः ॥ २१ ॥ ॐ गोविंदाय न
 मः ॥ २२ ॥ ॐ कीर्तिभाजनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ गोवर्धनधराय नमः ॥ २४ ॥

॥ राम ॥

॥ १ ॥

ॐ देवाय नमः ॥ २५ ॥ ॐ भूधराय नमः ॥ २६ ॥ ॐ भुवनेश्वराय नमः ॥ २७ ॥ ॐ
 वेवेनमः ॥ २८ ॥ ॐ यज्ञपुरुषाय नमः ॥ २९ ॥ ॐ यज्ञेश्वराय नमः ॥ ३० ॥ ॐ य
 ज्ञवाहनाय नमः ॥ ३१ ॥ ॐ चक्रपात्राय नमः ॥ ३२ ॥ ॐ गदापात्राय नमः
 ॥ ३३ ॥ ॐ शंखपात्राय नमः ॥ ३४ ॥ ॐ नरोत्तमाय नमः ॥ ३५ ॥ ॐ वैकुंठ
 याय नमः ॥ ३६ ॥ ॐ दुष्टदमनाय नमः ॥ ३७ ॥ ॐ भूगर्भाय नमः ॥ ३८ ॥ ॐ
 पीतवासशे नमः ॥ ३९ ॥ ॐ त्रिविक्रमाय नमः ॥ ४० ॥ ॐ त्रिकालज्ञाय
 नमः ॥ ४१ ॥ ॐ त्रिमूर्तये नमः ॥ ४२ ॥ ॐ नन्दकेश्वराय नमः ॥ ४३ ॥ ॐ रामाय
 नमः ॥ ४४ ॥ ॐ रामाय नमः ॥ ४५ ॥ ॐ हयग्रीवाय नमः ॥ ४६ ॥ ॐ भीमाय
 नमः ॥ ४७ ॥ ॐ रोद्राय नमः ॥ ४८ ॥ ॐ भवोद्भवाय नमः ॥ ४९ ॥ ॐ श्रीपत

१२॥ श ॥ येनमः॥ ५०॥ ॐ श्रीवरायनमः॥ ५१॥ ॐ श्रीशायनमः॥ ५२॥ ॐ मंगला
 यनमः॥ ५३॥ ॐ मंगलायुधायनमः॥ ५४॥ ॐ दामोदरायनमः॥ ५५॥
 १२॥ ॐ दामोपेतायनमः॥ ५६॥ ॐ केशवायनमः॥ ५७॥ ॐ केशसूदनायन
 मः॥ ५८॥ ॐ वरेणायनमः॥ ५९॥ ॐ वरदायनमः॥ ६०॥ ॐ विष्णुवेन
 मः॥ ६१॥ ॐ आनंदायनमः॥ ६२॥ ॐ वसुदायनमः॥ ६३॥ ॐ वसुवेन
 मः॥ ६४॥ ॐ हिरण्यतनुसंकाशायनमः॥ ६५॥ ॐ सूर्यकोटिसमप्रभा
 यनमः॥ ६६॥ ॐ हिरण्यरेतसेनमः॥ ६७॥ ॐ दीप्तायनमः॥ ६८॥ ॐ पुरा
 णायनमः॥ ६९॥ ॐ पुरुषोत्तमायनमः॥ ७०॥ ॐ सकलायनमः॥ ७१॥
 ॐ निष्कलायनमः॥ ७२॥ ॐ विशुद्धायनमः॥ ७३॥ ॐ निर्गुणायनमः॥ ७४॥

॥ राम ॥

॥ २ ॥

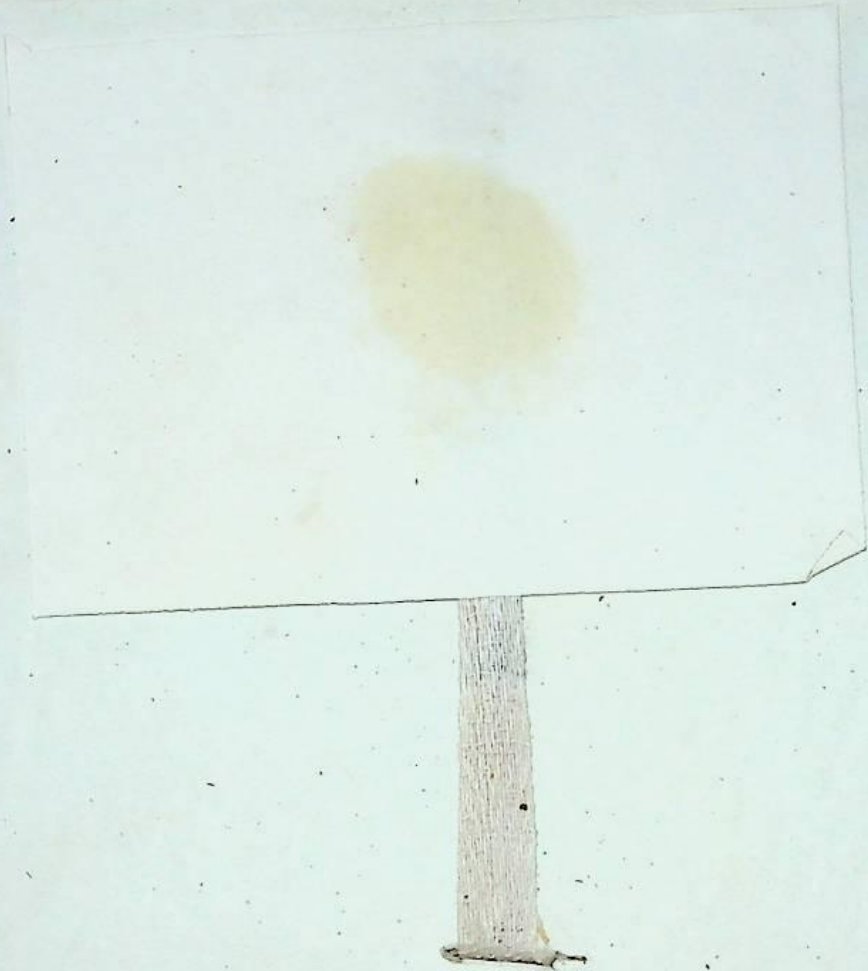
ॐ गुरा संस्थिताय नमः ॥ ७५ ॥ ॐ मेघश्यामाय नमः ॥ ७६ ॥ ॐ चतुर्वाह
 वे नमः ॥ ७७ ॥ ॐ कुशलाय नमः ॥ ७८ ॥ ॐ कमलेश्वराय नमः ॥ ७९ ॥ ॐ
 ज्योतिरूपाय नमः ॥ ८० ॥ ॐ अरूपाय नमः ॥ ८१ ॥ ॐ स्वरूपाय नमः ॥
 ॥ ८२ ॥ ॐ हृदिसंस्थिताय नमः ॥ ८३ ॥ ॐ सर्वज्ञाय नमः ॥ ८४ ॥ ॐ सर्वभू
 तस्थाय नमः ॥ ८५ ॥ ॐ सर्वेशाय नमः ॥ ८६ ॥ ॐ सर्वतोमुरवाय नमः ॥
 ॥ ८७ ॥ ॐ ज्ञानकूटस्थाय नमः ॥ ८८ ॥ ॐ अचलाय नमः ॥ ८९ ॥ ॐ ज्ञान
 दाय नमः ॥ ९० ॥ ॐ परमाय नमः ॥ ९१ ॥ ॐ प्रभवे नमः ॥ ९२ ॥ ॐ योगेशा
 य नमः ॥ ९३ ॥ ॐ योगनिश्चय नमः ॥ ९४ ॥ ॐ गिने नमः ॥ ९५ ॥ ॐ योगरू
 पिणे नमः ॥ ९६ ॥ ॐ इश्वराय नमः ॥ ९७ ॥ ॐ सर्वभूतेशाय नमः ॥ ९८ ॥ ॐ
 ॐ सर्वभूतसमाय नमः ॥ ९९ ॥ ॐ विमवे नमः ॥ १०० ॥ इति नाम शतं दिव्यं

यो

॥ वि. १ ॥ वैद्वन्वंशलपापहं ॥ व्यासेन कथितं पूर्व सर्वपापप्रणाशनं ॥ १ ॥ यः पठे
॥ ३ ॥ त्प्रातरुत्थाय स भवेद्वैद्वन्वो नरः ॥ सर्वपापविशुद्धात्मा विद्वन्सायुज्य
माप्नुयात् ॥ २ ॥ चांद्रायणसहस्राणि कन्यादानशतानि च ॥ गवां लक्ष
सहस्राणि मुक्तिभागे भवेन्नरः ॥ ३ ॥ अश्वमेधायुतं पुराणफलं मा
प्नोति मानवः ॥ ॥ इति श्रीविद्वन्शतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ राम ॥

॥ ३ ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ वि. १ ॥ वैष्णवं खलपापहं ॥ व्यासेन कथितं पूर्वं सर्वपापप्रणाशनं ॥ १ ॥ यः पठे
॥ ३ ॥ त्प्रातरुत्थाय स भवेद् वैष्णवो नरः ॥ सर्वपापविशुद्धात्मा विष्णुसायुज्य
माप्नुयात् ॥ २ ॥ चांद्रायणसहस्राणिकं न्यादानशतानि च ॥ गवो लक्ष
सहस्राणि मुक्तिभावो भवेन्नरः ॥ ३ ॥ अश्वमेधायुतं पुराणफलं मा
प्नोति मानवः ॥ ॥ इति श्रीविष्णुशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ राम ॥

॥ ३ ॥

